धर्म—सब कुछ है, कुछ भी नहीं

श्रीमद् तुलसी गणी

आचार्य :

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी सम्प्रदाय

(जनवरी सन् १९५० के दिल्ली के 'सर्व धर्म सम्मेलन' के अवसर पर प्रदत्त)

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

धर्म—सबकुछ है, कुछ भी नहीं

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

शान्ति और अशान्ति दोनों का पिता मानव है। अन्तर्जगत्में शान्तिका अविरल स्रोत बहता है फिर भी बाहरी वस्तुओंके लुभावने आकर्षणने मानवका मन खींच लिया। अब वह उनको पानेकी धुनमें फिर रहा है, बस वहीं अशान्तिका जन्म होता है। मानव अपने आपको भूल जाता है, शान्ति भी अपना मुंह छिपा लेती है। आजका मानव कस्तूरीवाले हरिणकी भांति शांतिकी खोजमें दौड़-धूप कर रहा है किन्तु उसे समझना चाहिये कि शान्ति अपने आपमें साध्य और अपने आपमें साधन है। वह कहीं बाह्यजगत्में नहीं रहती और न बाहरी वस्तुओंसे वह मिल भी सकती है। यह धार्मिक सम्मेलन फिर इस तत्त्वको जनताके हृदय तक पहुंचाए, यह मेरी हार्दिक अभिलाषा है। तृष्णाका ग्रास बना हुआ मानव सार्वभौम चक्रवर्ती होने पर भी सुखी नहीं होता और सन्तोषी मानव अकिंचन होते हुए भी सुखी रहता है, इससे जाना जाता है कि परिग्रहमें शान्ति नहीं है। भगवान् महावीरने कहा है, 'परिग्रह जैसा दूसरा कोई बंधन नहीं।"

संसारी प्राणी सर्वथा अपरिग्रही बन जायं, यह दुरूह कल्पना है फिर भी यदि वे जीवनके साधनोंको कमसे कम करनेकी चेष्टा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कर, संग्रहको अनर्थका मूल मानें तो समझलो कि शान्ति दूर नहीं है। समूचे विश्व पर अधिकार जमानेवाला एक मुहूर्तमात्र भी सुखकी नींद नहीं सोता, प्राणीमात्रको आत्मतुल्य समझनेवाला तृणमात्र भी उद्विग्न नहीं होता—इससे जाना जाता है कि हिंसामें शान्ति नहीं है। इसलिए 'समूचा संसार हमारा मित्र है, किसीके साथ हमारा वैर-विरोध नहीं है'—शान्तिप्रिय व्यक्तियोंका यह महामन्त्र होता है। गृहस्थ व्यक्ति भी यदि निष्प्रयोजन हिंसा न करे, दूसरोंके अधिकारोंका अपहरण न करे, तो विश्वशांतिका अन्वेषण ही क्यों करना पड़े? जो व्यक्ति इन्द्रिय, मन और वाणी पर नियन्त्रण नहीं रख पाते वे ही कलह आदिको जन्म देते हैं—इससे जाना जाता है कि असंयममें शांति नहीं है। इसलिए वीतराग वाणीमें अहिंसा, संयम और तपस्याको धर्म बताया गया है। धर्मके बिना—दूसरे शब्दोंमें, अहिंसा, संयम और अपरिग्रहके बिना शांतिका कोई बीज नहीं है। यह घोषित करते हुए मुझे आत्मश्रद्धाका अनुभव हो रहा है। यदि जनता शान्तिका अर्थ जीवनके साधनोंका विस्तार करती है तो उसके लिए धर्म कुछ भी कार्यकर नहीं। वह दिन मानव-जातिके इतिहासमें अपूर्व होगा, जिस दिन धर्मका शुद्ध रूप जनताके हृदयमें प्रवेश पाएगा।

जहां तक सत्यान्वेषणका प्रश्न है—वहांतक धर्म और विज्ञान के लक्ष्य दो नहीं हैं। मानव जातिका विकास करना, उसे सुखी बनाना ये लक्ष्य धर्म और विज्ञानके बीच एक भींत खड़ी कर देते हैं। आत्मा और परम लक्ष्य - परमात्म स्वरूप पाना, इनको भुलाकर विज्ञान-जगतने धार्मिक जगत्की कोई हानि नहीं की अपितु विज्ञानको ही अपने आपके लिए अभिशाप बनाया है। यदि इसके साथ आत्मविकास और आत्मसुखका दृष्टिकोण सन्तुलित होता तो वर्तमान संसारका मानचित्र कुछ दूसरा ही दीखता।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

इस समय मानव-समाजके सामने जटिल समस्याओंका तांता सा जुड़ा हुआ है—यह सब जानते हैं। अन्न और वस्त्रकी कमी, तथा दारिद्र्य आदि समस्याओंको गिन-गिन कई व्यक्तियोंने सम्भवतः अंगुलियां घिस डालीं। किन्तु मेरी दृष्टिमें मानसिक समस्या जैसी जटिल है वैसी जटिल दूसरी कोई भी नहीं है। दूसरी समस्याएँ इसके आधार पर टिकी हुई हैं। मानसिक समस्याके मिटने पर अन्न, वस्त्र, दारिद्र्य आदि की समस्याएँ आज सुलझ सकती हैं। शिक्षामें आध्यात्मिक तत्त्व आ जांय, लोग संयमी पुरुषोंको सबसे महान् समझने लग जांय तो ये सब समस्याएँ उनके कारण अपनी मौत मर जांय—यह मुझे विश्वास है।

पुराने जमानेमें जब संयमको लोग धनसे अधिक मूल्यवान् समझते थे, तब जनतामें संग्रहकी भावना प्रबल नहीं होती थी। हिंसा, परिग्रह आदि जब जनताके जीवन-निर्वाहकी परिधिको लांघकर तृष्णाके क्षेत्रमें आ जाते हैं तब सामूहिक अशान्तिका जन्म होता है। इसलिए धार्मिक पुरुष उनकी इयत्ता करें—सीमा करें और दूसरोंसे करवावें—यही सबके लिए श्रेयस्-मार्ग है। 'अमुक परिमाणसे अधिक हिंसा मत करो, संग्रह मत करो' ऐसा व्यापक प्रचार किया जाय तो धर्मकी छत्रछायामें जगत्की सारी गुत्थियां सुलझ जायं, ऐसी मेरी धारणा है। विषयका उपसंहार करते हुए यदि मैं कहूं तो यही कहूंगा कि यदि धर्मका आचरण किया जाय तो वह विश्वको सुखी करनेके लिए सर्व शक्तिमान् है और यदि धर्मका आचरण न किया जाय तो वह कुछ भी नहीं कर सकता। इसलिए धर्मका अन्वेषण करनेवालोंको आत्म-नियन्त्रणका अभ्यास करना चाहिए—इसीसे धर्मकी सफल आराधना हो सकती है।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सर्वमस्ति-नास्ति किञ्चित्

आचार्य : श्री तुलसी गणी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

शान्तिरशान्तिश्च उभेऽपि मानवनिर्मिते। अन्तर्जगति वहति सततं शान्तेः स्रोतः। तदपि बाह्यवस्तूनां मोहकाकर्षणेन लुब्धा जनाः तदर्जनाय विहितविविधयत्ना विपुलकलेवरामुदभावयन्न शान्तिम्। जाता स्वरूपविस्मृतिः, निलीनश्च सुखं शान्त्याः। कस्तूरिका मृग इव शान्तिमन्विच्छन्नितस्ततो भ्राम्यति बहिरसौ जनः, किन्तु तेनेति बोध्यम्—शान्तिः स्वयं साध्या स्वयञ्च साधनम्। न खलु सा क्वापि मनसो बहिस्तिष्ठति, न च बाह्य पदार्था अपि तत्साधनम्। जायमानानि इमानि धर्मसम्मेलनानि पुनरपि एतत्तत्त्वं लोकानां हृदयङ्गमीकुर्युरिति सततमभिलषे। तृष्णया कवलितः प्रचुरसंपदां प्रभुरपि न सुखमेधते, सन्तुष्टचेता अकिञ्चनोऽपि सुखं जीवतीति परिज्ञायते शान्तिरस्ति अपरिग्रहे। उक्तञ्च भगवता महावीरेण—नास्ति परिग्रहसदृशोऽन्यः पाशः प्रतिबन्धो वा प्राणिनाम्। गृहवासिनः सर्वथा स्युरपरिग्रहव्रतिन इति दुर्वितर्कम्, तथापि ते जीवननिर्वाहसाधनानि स्वल्पात्स्वल्पतराणि कर्तुं प्रयतेरन्, संग्रहं अनर्थमूलञ्च मन्येरन्, तद् बोध्यं, नास्ति विश्वशान्तिर्दूरम्। समस्तेऽपि विश्वे स्वाधिकारान् उपयुञ्जानो न सुखं निद्राति मुहूर्तमपि, सर्वभूतेषु आत्मौपम्यं चेतो निदधत् नोद्विजते क्षणमपीति सम्बुध्यते शान्तिरस्ति अहिंसायाम्। अतएव "मित्ती मे सव्व भूएसु, वैरं मज्झं न केणई" इति भवति

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

शान्तिप्रियाणां महामन्त्रः। गृहस्था अपि अनर्थदण्डं न प्रयुञ्जीरन्, परेषामधिकारान् स्वीकर्तुं न प्रवर्तेरन्, तत्कृतोऽन्वेषणीया विश्व-शान्तिः। अनियन्त्रितेन्द्रियविषया, उच्छृङ्खलवाचः, असंयतमनसो हि जना कलहादिकं प्रसुवते इति सुबोध्यं भवति शान्तिरस्ति संयमे।

अतएव वीतरागवाण्याम्—"धम्मो मंगलमुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो" इति स्वरूपं निश्चितमभूद् धर्मस्य। अहिंसाऽपरिग्रह संयमात्मकं धर्ममन्तरा नास्त्यन्यच्छान्तेर्बीजं किञ्चिदिति स्पष्ट मुद्घोषयितुं शक्यम्। यदि च लोका जीवननिर्वाहसाधनानां विस्तारमेव शान्तिं मन्वते तन्न तदर्थं धर्मः किञ्चित्करः। धर्मस्य तत्त्वं हृदयङ्गतं भविष्यति तर्हिनं मानव जातेरितिहासे अपूर्वं भावि।

यावत्पर्यन्तं विज्ञानस्य सत्यान्वेषणस्य प्रश्नोऽस्ति तावद् न तल्लक्ष्य दृष्ट्या धर्मतो द्वैततामेति, किन्तु विकासलक्ष्ये सुखीकरण-लक्ष्ये च इदमर्हति धर्मतो द्वैधम्। चेतनतत्त्वमुपेक्ष्य परं लक्ष्यं च गौणीकृत्य विज्ञानजगता न धार्मिकजगतः काचन हानिःकृता, अपितु विज्ञानं स्वस्मिन्नेव अभिशापरूपमकारि कामम्। यद्येतेन सह आत्मविकासस्य, आत्मसुखस्य वा दृष्टिकोणः संपृक्तोऽभविष्यत् तत् साम्प्रतिकजगतश्चित्रमपि किञ्चिदन्यदेवाभविष्यत्।

इदानीं जनानां संमुखे विविधा जटिलातिजटिलाः सन्ति समस्या इति स्वयं गम्यम्। तासु लोका अन्नवस्त्राल्पत्वस्य दारि-द्र्यादीनाञ्च परिगणनमपि रचयन्ति यथावकाशम्। किन्तु मम दृष्टौ मानसिकी समस्या यादृशी जटिलास्ति तादृशी नान्या काचन परिलोक्यते। अन्यासामस्तित्वमस्ति तत्सत्तायामेव, अन्यथा स्युस्ताः सर्वा विलीनाः। यदि शिक्षायामाध्यात्मिकतत्त्वं प्रविशेत जनानां दृष्टौ संयमिन एव सर्वप्रधानाः स्युस्तद् विश्वसिमि किल

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अल्पीयसापि काले न समस्याहेतुभूतानि क्रूरत्वसंग्रहममत्वादीनि स्वमृत्युना म्रियेरन्। प्राग्वर्तिनि समये लोका नाधिकं संग्रहादिपरा अभूवन् तत्कारणं तदानीं प्रवृत्तं संयममाहात्म्यमेव।

हिंसापरिग्रहादयो जीवननिर्वाहपरिधिमतिक्रम्य तृष्णाक्षेत्रे विहरन्ति तदा आसादयति जन्म सामूहिकी अशान्तिः। तेन धार्मिकाः तेषामियत्तां कुर्युः, कारयेयुरित्यस्ति सर्वतो भद्रःपन्थाः। निर्दिष्टपरिमाणादुपरि हिंसा न कार्या, संग्रहो न कार्यः, मन्ये एतादृश व्यापकप्रचारेण धर्मस्य छत्रच्छायायां जगत्समस्या स्यात् स्वयं मुक्तग्रन्थिः। उपसंहरन्नन्ते संक्षेपेण यदि वच्मि तद् वक्ष्यामीति यत् यदि धर्मस्य आचरणं तत् स विश्वं सुखयितुं सर्वशक्तिमान्, यदि नास्ति तदाचरणं तन्नास्ति स किमपि कर्तुमर्हः। तेन धर्मान्वेषणार्थं प्रयतमानैरात्मनियन्त्रणार्थं प्रयतनीयमिति भवेत् सुफला धर्माराधना।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com